महामुनि मार्कण्डेयजी की शिवोपासना तथा मृत्युञ्जयस्तोत्र

किसी समय वसिष्ठजी राजा दिलीप को मार्कण्डेयजी के जन्म का वृत्तान्त बताते हुए कहते हैं कि महामुनि मृकण्डु के कोई सन्तान नहीं थी; अत: उन्होंने अपनी पत्नी के साथ तपस्या और नियमों का पालन करते हुए भगवान् शङ्कर को सन्तुष्ट किया। सन्तुष्ट होने पर पिनाकधारी शिवजी ने पत्नीसहित मुनि से कहा– 'मुने! मुझसे कोई वर माँगो।' तब मुनि ने यह वर माँगा– 'परमेश्वर! आप मेरे स्तवन से सन्तुष्ट हैं; इसलिये मैं आपसे एक पुत्र चाहता हूँ। महेश्वर! मुझे अबतक कोई सन्तान नहीं हुई।'

भगवान् शङ्कर बोले– मुने! क्या तुम उत्तम गुणों से हीन चिरंजीवी पुत्र चाहते हो या केवल सोलह वर्ष की आयुवाला एक ही गुणवान् एवं सर्वज्ञ पुत्र पाने की इच्छा रखते हो?

उनके इस प्रकार पूछने पर धर्मात्मा मृकण्डु ने कहा– 'जगदीश्वर! मैं गुणहीन पुत्र नहीं चाहता। उसकी आयु छोटी ही क्यों न हो, वह सर्वज्ञ होना चाहिये।'

भगवान् शङ्कर बोले– अच्छा तो तुम्हें सोलह वर्ष की आयुवाला एक पुत्र प्राप्त होगा, जो परम धार्मिक, सर्वज्ञ, गुणवान्, लोक में यशस्वी और ज्ञान का समुद्र होगा।

ऐसा कहकर भगवान् शिव अन्तर्धान हो गये और मुनिवर मृकण्डु इच्छानुसार वरदान पाकर प्रसन्न हो अपने आश्रम में लौट आये। उनकी पत्नी मरुद्वती बहुत दिनों के बाद गर्भवती हुई। मुनि ने विधिपूर्वक गर्भाधान–संस्कार किया था।

तदनन्तर गर्भस्थ बालक में चेष्टा उत्पन्न होने से पहले पुरुष की वृद्धि के लिये उन्होंने किसी शुभ दिन को गृह्यसूत्रों में बतायी हुई विधि के अनुसार अच्छे ढंग से पुंसवन–संस्कार किया। जब आठँवा मास आया, तब संस्कार–कर्मों के ज्ञाता उन मुनीश्वर ने गर्भ के रूप की समृद्धि और सुखपूर्वक सन्तान की उत्पत्ति होने के लिये सीमन्तोन्नयन–संस्कार किया। समय आने पर मरुद्वती के गर्भ से सूर्य के समान तेजस्वी पुत्र का जन्म हुआ। बालक की शान्ति के लिये वेदव्यास आदि मुनि भी मृकण्डु के आश्रम पर पधारे। साक्षात् महामुनि वेदव्यास ने बालक का जातकर्म–संस्कार कराया। तत्पश्चात् ग्यारहवें दिन मुनि ने नामकरण–संस्कार किया। उसके बाद नाना प्रकार के वेदोक्त मन्त्रों और आशीर्वादों से अभिनन्दन करके मुनियों ने बालक की रक्षा का शास्त्रीय उपाय किया। फिर मृकण्डु मुनि के द्वारा पूजित हो वे सब लोग लौट गये।

उस समय नगर और प्रान्त के लोग हर्ष में भरकर आपस में कहते थे– 'अहो! इस बालक का अद्‌भुत रूप है! अद्‌भुत तेज है! और समस्त अंगों का लक्षण भी अद्‌भुत है। मरुद्वती के सौभाग्य से साक्षात् भगवान् शङ्कर ही इस बालक के रूप में प्रकट हुए हैं, यह कितने आश्चर्य की बात है। चौथे महीने में पिता ने पुत्र को घर से बाहर निकाला। छठे महीने में उसका अन्नप्राशन कराया। फिर ढाई वर्ष की अवस्था में चूडाकर्म करके श्रवण नक्षत्र में कर्णवेध किया। तदनन्तर कर्मों के ज्ञाता मृकण्डु मुनि

ने बालक के ब्रह्मतेज की वृद्धि के लिये पाँचवें वर्ष की अवस्था में उसे यज्ञोपवीत दे दिया। फिर उपाकर्म करके विद्वान् मुनि ने बालक को वेद पढ़ाया। उसने अंग, उपांग, पद तथा क्रमसहित सम्पूर्ण वेदों का विधिपूर्वक अध्ययन किया। वह बालक बड़ा शक्तिशाली था। गुरु तो उसके साक्षीमात्र थे। उसने विनय आदि गुणों को प्रकट करते हुए गुरुमुख से समस्त विद्याओं को ग्रहण किया। वह भिक्षा के अन्न से जीवन-निर्वाह करता हुआ प्रतिदिन माता-पिता की सेवा में संलग्न रहता था। बुद्धिमान् मार्कण्डेय की आयु का सोलहवाँ वर्ष प्रारंभ होने पर मृकण्डु मुनि का हृदय शोक से कातर हो उठा। उनकी सम्पूर्ण इन्द्रियों में व्याकुलता छा गयी। वे दीनतापूर्वक विलाप करने लगे। मार्कण्डेय ने पिता को अत्यन्त दु:खित होकर विलाप करते देख पूछा-'तात! आपके शोक-मोह का क्या कारण है?' मार्कण्डेय के मधुर वचन सुनकर मृकण्डु ने अपने शोक का युक्तियुक्त कारण बताया।

मृकण्डु बोले-'बेटा! पिनाकधारी भगवान् शङ्कर ने तुम्हें सोलह वर्ष की ही आयु दी है। उसकी समाप्ति का समय अब आ पहुँचा है; इसीलिये मुझे शोक हो रहा है।'

पिताजी का यह कथन सुनकर मार्कण्डेय ने कहा-'पिताजी! आप मेरे लिये कदापि शोक न कीजिये। मैं ऐसा यत्न करूँगा, जिससे अमर हो जाऊँ। महादेवजी सबको मनोवांछित वस्तु प्रदान करनेवाले और कल्याणस्वरूप हैं। वे मृत्यु को जीतनेवाले, विकराल नेत्रधारी, सर्वज्ञ, सत्पुरुषों को सब कुछ देनेवाले, काल के भी काल, महाकालरूप और कालकूट विष को भक्षण करनेवाले हैं। मैं उन्हीं की आराधना करके अमरत्व प्राप्त करूँगा।' पुत्र की यह बात सुनकर माता-पिता को बड़ा हर्ष हुआ। उन्होंने सारा शोक छोड़कर प्रसन्नतापूर्वक कहा-'बेटा! तुमने हम दोनों का शोक नष्ट करने के लिये भगवान् मृत्युञ्जय की आराधनारूप महान् उपाय का प्रतिपादन किया है। तात! तुम उन्हीं की शरण में जाओ। उनसे बढ़कर दूसरा कोई भी हितैषी नहीं है। जो बात मन की कल्पना में भी नहीं आ सकती, उसे भी भगवान् शङ्कर सिद्ध कर देते हैं। वे काल का भी संहार करनेवाले हैं। बेटा! क्या तुमने नहीं सुना है, पूर्वकाल में कालपाश से बँधे हुए श्वेतकेतु की महादेवजी ने किस प्रकार रक्षा की? उन्होंने ही समुद्र-मन्थन से प्रकट हुए प्रलयकालीन अग्नि के समान भयंकर हालाहल विष का पान करके तीनों लोकों को बचाया था। जिसने तीनों लेकों की सम्पत्ति हड़प ली थी, उस महान् अभिमानी जलंधर को अपने चरणों की अंगुष्ठरेखा से प्रकट हुए चक्र द्वारा मौत के घाट उतार दिया था। ये वही भगवान् धूर्जटि हैं, जिन्होंने श्रीविष्णु को बाण बनाकर एक ही बाण के प्रहार से उत्पन्न हुई आग की लपटों से दैत्यों के तीनों पुरों को जला डाला था। अन्धकासुर तीनों लोकों का ऐश्वर्य पाकर विवेकशून्य हो गया था, किन्तु उसे भी महादेवजी ने अपने त्रिशूल की नोक पर रखकर दस हजार वर्षोंतक सूर्य की किरणों में सुखाया। केवल दृष्टि डालनेमात्र से तीनों लोकों को जीत लेनेवाले प्रबल कामदेव को उन्होंने ब्रह्मा आदि देवताओं के देखते-देखते जलाकर भस्म कर डाला-अनंग की पदवी को पहुँचा

दिया। भगवान् शिव ब्रह्मा आदि देवताओं के एकमात्र कर्ता, मेघरूपी वृषभ पर सवारी करनेवाले, अपनी महिमा से कभी च्युत न होनेवाले, सम्पूर्ण विश्व के आश्रय और जगत् की रक्षा के लिये दिव्य मणि हैं। बेटा! तुम उन्हीं की शरण में जाओ।'

इस प्रकार माता-पिता की आज्ञा पाकर मार्कण्डेयजी दक्षिण-समुद्र के तट पर चले गये और वहाँ विधिपूर्वक अपने ही नाम से एक शिवलिंग स्थापित किया। तीनों समय स्नान करके वे भगवान् शिव की पूजा करते और पूजा के अन्त में स्तोत्र पढ़कर नृत्य करते थे। उस स्तोत्र से एक ही दिन में भगवान् शंकर सन्तुष्ट हो गये। मार्कण्डेयजी ने बड़ी भक्ति के साथ उनका पूजन किया। जिस दिन उनकी आयु समाप्त होनेवाली थी, उस दिन शिवजी की पूजा में संलग्न हो वे ज्यों ही स्तुति करने को उद्यत हुए, उसी समय मृत्यु को साथ लिये काल उन्हें लेने के लिये आ पहुँचा। उसके गोलाकार नेत्र किनारे की ओर से लाल-लाल दिखायी दे रहे थे। साँप और बिच्छू ही उसके रोम थे। बड़ी-बड़ी दाढ़ों के कारण उसका मुख अत्यन्त विकराल जान पड़ता था। वह काजल के समान काला था। समीप आकर काल ने उनके गले में फंदा डाल दिया। गले में बहुत बड़ा फंदा लग जाने पर मार्कण्डेयजी ने कहा-'महामते काल! मैं जबतक जगदीश्वर शिव के मृत्युंजय नामक महास्तोत्र का पाठ पूरा न कर लूँ, तबतक मेरी प्रतीक्षा करो। मैं शिवजी की स्तुति किये बिना कहीं नहीं जाता। भोजन एवं शयनतक नहीं करता। यह मेरा निश्चित व्रत हैं। संसार में जीवन, स्त्री, राज्य तथा सुख भी मुझे उतना प्रिय नहीं है जितना कि यह शिवजी का स्तोत्र है। यदि मैंने इस विषय में कोई असत्य बात न कही हो तो इस सत्य के प्रभाव से भगवान् महेश्वर सदा मुझ पर प्रसन्न रहें।'

यह सुनकर काल ने मार्कण्डेयजी से हँसते-हँसते कहा-'ब्रह्मन्! मालूम होता है तुमने पूर्वकाल से निश्चित की हुई बड़े-बूढ़ों की यह बात नहीं सुनी है-जो मूढ़बुद्धि मानव आयु के प्रथम भाग में ही धर्म का अनुष्ठान नहीं करता, वह वृद्ध होने पर साथियों से बिछुड़े हुए साथी की भाँति पश्चात्ताप करता है। आठ महीनों में ऐसा उपाय कर लेना चाहिये, जिससे वर्षाकाल के चार महीने सुख से बीतें। दिन में ही वह काम पूरा कर ले, जिससे रात में सुखी रहे। पहली अवस्था में ही ऐसा कार्य कर ले, जिससे बुढ़ापे में सुख से रहे। जीवन भर ऐसा कार्य करता रहे, जिससे मरने के बाद सुख हो। जो कार्य कल करना हो, उसे आज ही कर ले। जिसे अपराह्न में करना हो, उसे पूर्वाह्न में ही कर डाले। काल इस बात की प्रतीक्षा नहीं करता कि इस पुरुष का काम पूरा हुआ है या नहीं। यह कार्य कर लिया, यह करना है और इस कार्य का कुछ अंश हो गया है तथा कुछ बाकी है-इस प्रकार की इच्छाएँ करते हुए पुरुष को काल सहसा आकर दबोच लेता है। जिसका काल नहीं आया है, वह सैकड़ों बाणों से बिंध जाने पर भी नहीं मरता तथा जिसका काल आ पहुँचा है, वह कुश के अग्रभाग से छू जाने पर भी जीवित नहीं रहता। मैं हजारों चक्रवर्ती राजाओं और सैकड़ों इन्द्रों को भी अपना ग्रास बना चुका हूँ। अतः इस विषय में तुम्हें क्रोध नहीं करना चाहिये।'

जिसका प्रयास कभी विफल नहीं होता, उस काल के उपर्युक्त वचन सुनकर शिवजी की स्तुति में तत्पर रहनेवाले मार्कण्डेयजी ने कहा- 'काल! भगवान् शिव की स्तुति में लगे रहनेवाले पुरुषों के कार्य में जो लोग विघ्न डालते हैं, वे शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं; इसीलिये मैं तुम्हें मना करता हूँ। जैसे राजा के सिपाहियों पर राजा ही शासन कर सकता है, दूसरा कोई नहीं, उसी प्रकार शिवजी के भक्तों पर परमेश्वर शिव ही शासन कर सकते हैं। भगवान् शंकर के सेवक पर्वतों को भी विदीर्ण कर डालते हैं, समुद्रों को भी पी जाते हैं तथा पृथ्वी और अन्तरिक्ष को भी हिला देते हैं। इतना ही नहीं, वे ब्रह्मा और इन्द्र को भी तिनके के समान समझते हैं। भला उनके लिये कौन-सा कार्य दुष्कर है? भगवान् शिव के भक्तों पर मृत्यु, ब्रह्मा, यमराज तथा दूसरे कोई भी अपना प्रभुत्व नहीं स्थापित कर सकते। काल! क्या तुमने मनीषी पुरुषों का यह वचन नहीं सुना है कि शिवभक्त मनुष्यों पर कहीं भी आपत्ति नहीं आती। ब्रह्मा आदि सम्पूर्ण देवता क्रुद्ध हो जायँ, तो भी वे उन्हें मारने की शक्ति नहीं रखते।'

मार्कण्डेयजी के इस प्रकार फटकारने पर भगवान् काल आँखें फाड़-फाड़कर उनकी ओर देखने लगे, मानो तीनों लोकों को निगल जायँगे। वे क्रोध में भरकर बोले- 'ओ दुर्बुद्धि ब्राह्मण! गंगाजी में जितने बालू के कण हैं, उतने ब्रह्माओं का इस काल ने संहार कर डाला है। इस विषय में बहुत कहने की क्या आवश्यकता। मेरा बल और पराक्रम देखो, मैं तुम्हें अपना ग्रास बनाता हूँ; तुम इस समय जिनके दास बने बैठे हो, वे महादेव मुझसे तुम्हारी रक्षा करें तो सही।'

वसिष्ठजी कहते हैं-राजन्! जैसे राहु चन्द्रमा को ग्रस लेता है, उसी प्रकार गर्जना करते हुए काल ने महामुनि मार्कण्डेय को हठपूर्वक ग्रसना आरम्भ किया। उसी समय परमेश्वर शिव उस लिंग से सहसा प्रकट हो गये। उनकी अवस्था उनका रूप-सब कुछ अवर्णनीय था। मस्तक पर अर्धचन्द्राकार मुकुट शोभा पा रहा था। हुंकार भरकर मेघ के समान प्रचण्ड गर्जना करते हुए उन्होंने तुरंत ही मृत्यु की छाती में लात मारी। मृत्युदेव उनके चरण-प्रहार से भयभीत हो दूर जा पड़े। भयंकर आकारवाले काल को दूर पड़ा देख मार्कण्डेयजी ने पुनः उस स्तोत्र से भगवान् शंकर का स्तवन किया-

मृत्युञ्जस्तोत्र*

विनियोग

ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जय स्तोत्र मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमृत्युञ्जयो देवता, गौरीशक्तिः, मम सर्वारिष्टमृत्युशान्त्यर्थे, सकलैश्वर्य प्राप्त्यर्थं च जपे विनियोगः।

ध्यान

* रोगनिवृत्ति एवं मृत्युभय के निवारण में इस स्तोत्र का प्रयोग अद्भुत एवं चमत्कारी कहा गया है। अतः यहाँ पर उस स्तोत्र को प्रयोग के योग्य बनाने के लिये इसके ऋषि एवं छंद आदि के उल्लेख के साथ विनियोग तथा ध्यान का मन्त्र भी लिखा जा रहा है। इसका प्रयोग करने के लिये अन्य क्रियाओं की भाँति ही संकल्प लेकर करना चाहिये।

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो, द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्।

अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलासकान्तं शिवं, स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे।।

अर्थात् –त्र्यम्बक देव अष्टभुजाधारी हैं, इनके एक हाथ में अक्षमाला, दूसरे में मृगमुद्रा, दो हाथों में दो कलशों में अमृतरस लेकर उससे अपने मस्तक को आप्लावित कर रहे हैं और दो हाथों से उन्हीं कलशों को थामे हुए हैं, शेष दो हाथ अंक पर धरे हैं। उसमें दो अमृतपूर्ण घट हैं, वे श्वेत पद्म पर बैठे हैं, मुकुट पर बालचन्द्र शोभायमान है, मुखमण्डल पर तीन नेत्र हैं। ऐसे देवाधिदेव, कैलासपति श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

रत्नसानुशरासनं रजताद्रिशृङ्गनिकेतनं शिञ्जिनीकृतपन्नगेश्वरमच्युतानलसायकम्।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदशालयैरभिवन्दितं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।
पञ्चपादपपुष्पगन्धिपदाम्बुजद्वयशोभितं भाललोचनजातपावकदग्धमन्मथविग्रहम्।
भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशिनं भवमव्ययं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।
मत्तवारणमुख्यचर्मकृतोत्तरीयमनोहरं पङ्कजासनपद्मलोचनपूजिताङ्घ्रिसरोरुहम्।
देवसिद्धतरङ्गिणीकरसिक्तशीतजटाधरं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।
कुण्डलीकृतकुण्डलीश्वरकुण्डलं वृषवाहनं नारदादिमुनीश्वरस्तुतवैभवं भुवनेश्वरम्।
अन्धकान्तकमाश्रितामरपादपं शमनान्तकं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।
यक्षराजसखं भगाक्षिहरं भुजङ्गविभूषणं शैलराजसुतापरिष्कृतचारुवामकलेवरम्।
क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।
भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणं दक्षयज्ञविनाशिनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम्।
भुक्तिमुक्तिफलप्रदं निखिलाघसङ्घनिबर्हणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।
भक्तवत्सलमर्चतां निधिमक्षयं हरिदम्बरं सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेयमनूपमम्।
भूमिवारिनभोहुताशनसोमपालितस्वाकृतिं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।
विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परं संहरन्तमथ प्रपञ्चमशेषलोकनिवासिनम्।
क्रीडयन्तमहर्निशं गणनाथयूथसमावृतं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।
रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकण्ठमुमापतिम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।
कालकण्ठं कलामूर्तिं कालाग्निं कालनाशनम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।

नीलकण्ठं विरूपाक्षं निर्मलं निरुपद्रवम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।
वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।
देवदेवं जगन्नाथं देवेशमृषभध्वजम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।
अनन्तमव्ययं शान्तमक्षमालाधरं हरम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।
आनन्दं परमं नित्यं कैवल्यपदकारणम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।
स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।

(पद्मपु. उत्तर. - 236/75 - 90)

उपर्युक्त श्लोकों के भावार्थ निम्न हैं-

कैलास के शिखर पर जिनका निवास गृह है, जिन्होंने मेरु गिरि का धनुष, नागराज वासुकि की प्रत्यञ्चा और भगवान् विष्णु को अग्निमय बाण बनाकर तत्काल ही दैत्यों के तीनों पुरों को दग्ध कर डाला था, सम्पूर्ण देवता जिनके चरणों की वन्दना करते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या करेगा ?

मन्दार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन-इन पाँच दिव्य वृक्षों के पुष्पों से सुगन्धित युगल चरण-कमल जिनकी शोभा बढ़ाते हैं, जिन्होंने अपने ललाटवर्ती नेत्र से प्रकट हुई आग की ज्वाला में कामदेव के शरीर को भस्म कर डाला था, जिनका श्रीविग्रह सदा भस्म से विभूषित रहता है, जो भव-सबकी उत्पत्ति के कारण-होते हुए भी भव-संसार-के नाशक हैं तथा जिनका कभी विनाश नहीं होता, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या करेगा?

जो मतवाले गजराज के मुख्य चर्म की चादर ओढ़े परम मनोहर जान पड़ते हैं, ब्रह्मा और विष्णु भी जिनके चरण-कमलों की पूजा करते हैं तथा जो देवताओं और सिद्धों की नदी गंगा की तरंगों से भीगी हुई शीतल जटा धारण करते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या करेगा ?

गेंडुली मारे हुए सर्पराज जिनके कानों में कुण्डल का काम देते हैं, जो वृषभ पर सवारी करते हैं, नारद आदि मुनीश्वर जिनके वैभव की स्तुति करते हैं, जो समस्त भुवनों के स्वामी, अन्धकासुर का नाश करनेवाले, आश्रितजनों के लिये कल्पवृक्ष के समान और यमराज को भी शान्त करनेवाले हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या करेगा ?

जो यक्षराज कुबेर के सखा, भग देवता की आँख फोड़नेवाले और सर्पों के आभूषण धारण करनेवाले हैं, जिनके श्रीविग्रह के सुन्दर वामभाग को गिरिराजकिशोरी उमा ने सुशोभित कर रखा है, कालकूट विष पीने के कारण जिनका कण्ठभाग नीले रंग का दिखायी देता है, जो एक हाथ में फरसा

और दूसरे में मृगमुद्रा धारण किये रहते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या करेगा?

जो जन्म-मरण के रोग से ग्रस्त पुरुषों के लिये औषधरूप हैं, समस्त आपत्तियों का निवारण और दक्ष-यज्ञ का विनाश करनेवाले हैं, सत्त्व आदि तीनों गुण जिनके स्वरूप हैं, जो तीन नेत्र धारण करते, भोग और मोक्षरूपी फल देते तथा सम्पूर्ण पापराशि का संहार करते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या करेगा?

जो भक्तों पर दया करनेवाले हैं, अपनी पूजा करनेवाले मनुष्यों के लिये अक्षय निधि होते हुए भी जो स्वयं दिगम्बर रहते हैं, जो सब भूतों के स्वामी, परात्पर, अप्रमेय और उपमारहित हैं, पृथ्वी, जल, आकाश, अग्नि और चन्द्रमा के द्वारा जिनका श्रीविग्रह सुरक्षित है, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या करेगा?

जो ब्रह्मारूप से सम्पूर्ण विश्व की सृष्टि करते, फिर विष्णुरूप से सबके पालन में संलग्न रहते और अन्त में सारे प्रपञ्च का संहार करते हैं, सम्पूर्ण लोकों में जिनका निवास है तथा जो गणेशजी के पार्षदों से घिरकर दिन-रात भाँति-भाँति के खेल किया करते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर की मैं शरण लेता हूँ। यमराज मेरा क्या करेगा ?

जो दुःख को दूर करने के कारण रुद्र कहलाते हैं, जीवरूपी पशुओं को पालन करने से पशुपति, स्थिर होने से स्थाणु, गलें में नीला चिन्ह धारण करने से नीलकण्ठ और भगवती उमा के स्वामी होने से उमापति नाम धारण करते हैं, उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

जिनके गले में काला दाग है, जो कलामूर्ति, कालाग्निस्वरूप और काल के नाशक हैं, उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ, मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

जिनका कण्ठ नील और नेत्र विकराल होते हुए भी जो अत्यन्त निर्मल और उपद्रवरहित हैं, उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ, मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

जो वामदेव, महादेव, विश्वनाथ और जगद्गुरु नाम धारण करते हैं, उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

जो देवताओं के भी आराध्यदेव, जगत् के स्वामी और देवताओं पर भी शासन करनेवाले हैं, जिनकी ध्वजा पर वृषभ का चिन्ह बना हुआ है, उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

जो अनन्त, अविकारी, शान्त, रुद्राक्षमालाधारी और सबके दुःखों का हरण करनेवाले हैं, उन

भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

जो परमानन्दस्वरूप, नित्य एवं कैवल्यपद-मोक्ष-की प्राप्ति के कारण हैं, उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

जो स्वर्ग और मोक्ष के दाता तथा सृष्टि, पालन और संहार के कर्ता हैं, उन भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ। मृत्यु मेरा क्या कर लेगी?

वसिष्ठजी कहते हैं-मार्कण्डेयजी के द्वारा किये हुए इस स्तोत्र का जो भगवान् शंकर के समीप पाठ करेगा, उसे मृत्यु से भय नहीं होगा-यह मैं सत्य-सत्य कहता हूँ। बुद्धिमान् मार्कण्डेय के इस प्रकार स्तुति करने पर महादेवजी ने उन्हें अनेक कल्पोंतक की असीम आयु प्रदान की। इस प्रकार देवाधिदेव महादेवजी के प्रसाद से अमरत्व पाकर महातेजस्वी मार्कण्डेय ने बहुत-से प्रलय के दृश्य देखे हैं। वरदान पाने के अनन्तर महामुनि मार्कण्डेय ने पुनः अपने आश्रम में लौट कर माता-पिता को प्रणाम किया। फिर उन्होंने भी पुत्र का अभिनन्दन किया। उसके बाद मार्कण्डेयजी तीर्थयात्रा में प्रवृत्त होकर सदा इस पृथ्वी पर विचरने लगे। यमराज भी भगवान् शिव की स्तुति करके अपने लोक में चले गये।

स्कंदपुराण की एक कथा के अनुसार मार्कण्डेयजी एक बार प्रभास क्षेत्र में गये और वहाँ शिवजी की स्थापना तथा पूजा करके दक्षिण ओर स्थित हो पद्मासन लगाकर ध्यानमग्न हो गये। ध्यान में ही उनके दस हजार अरब युग बीत गये; परन्तु मुनिश्वर मार्कण्डेय नहीं जगे। इस दीर्घकाल में हवा से उड़ी हुई धूल के द्वारा धीरे-धीरे वहाँ के मन्दिर, शिवलिंग और स्थान आदि का लोप हो गया। तत्पश्चात् किसी समय मुनि जब समाधि से जगे, तब उन्होंने सारा शिवमन्दिर धूल से आच्छादित देखा। फिर वे मिट्टी खोदकर वहाँ से बाहर निकले और वहाँ शिवजी की पूजा के लिये एक बहुत बड़ा द्वार बनवाया। जो मनुष्य उसमें प्रवेश करके वहाँ भगवान् शिव का पूजन करता है, वह भगवान् शिव के परम धाम को प्राप्त होता है।

(उपर्युक्त कथा गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त पद्मपुराण (के पृ. 912-917) तथा भक्तचरितांक, जो संवत् 2049 में प्रकाशित हुए हैं, तथा स्कंदपुराणांक (पृ. 1018) पर आधारित है।)

❀❀❀❀❀❀